रविवार, दिनाँक 01-09-2024 को सत्संग में हुए वचनों का संक्षिप्त विवरण

जो मैं हूँ वो आप हैं, जो आप हैं मैं भी वही हूँ।

हम दोनों तो एक हैं

एक दा है प्रवेश, एक ही है विशेष

अब तो रहना है, जगत से निर्लेप

जो मैं हूँ वह आप हैं, जो आप हैं मैं भी वही हूँ।

सजनों यह सृष्टि का वास्तविक सत्य है। याद रखो जो इस सम-भाव पर खड़ा हो जाता है यानि जिसके मन में समता का भाव स्थित हो जाता है उसके लिए तूँ-मैं का सवाल मिट जाता है। ऐसा होने पर इन्सान के लिये दिव्य दृष्टि का सबक़ ग्रहण करना यानि समदृष्टि होना अत्यन्त ही सहज हो जाता है। अतः जब हम यह बोलते हैं कि जो मैं हूँ वो आप हैं, जो आप हैं मैं भी वही हूँ, तो हमें इस यथार्थ को स्वीकारना भी चाहिये और इसी अनुसार इस जगत में निर्भयता से विचरण करना चाहिये। याद रखो, जिस सजन को इस यथार्थता का आभास बना रहता है, वह मौत से भी नहीं भय खाता। इस तरह वह अपनी अजरता-अमरता, सर्व-शक्तिमानता, सर्व-व्यापकता व सर्वज्ञता के यथार्थ को समझ जाता है और शक्तिशाली होकर कीड़ी से लेकर हाथी तक व ब्रह्मा से लेकर तृण तक सबको एकरूप देखते हुए, एक-दर्शन में स्थित हो जाता है और मृतलोक पर फतह पा जाता है। ऐसा होने पर सजनों मन में सजन भाव उजागर होता है व नज़रों में समभाव स्थित हो जाता है। तब स्वतः ही आचार-व्यवहार समदृष्टि अनुरूप हो जाता है। तात्पर्य यह है कि इतनी सी बुद्धिमत्ता व इतनी सी समझदारी कलुकाल के इन्सान की कायाकल्प कर देती है और इंसान जीवन में आनन्द ही माणता है व तद्नुकूल आचार-व्यवहार दर्शा कर, आनन्द ही बाँटता है, जिससे सुकर्मों का राज स्थापित हो जाता है। जानो जहाँ सुकर्मों का राज होता है वहाँ सतवस्तु प्रगट रहती है। तभी तो सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में लिखा हैः-

सतवस्तु में प्रगटेंगे, शंख, चक्र, गदा पद्मधारी

हृदय में इस परम सत्य का साक्षात्कार होने पर इन्सान गद्गद् हो जाता है। परिणामतः अन्तःकरण यानि मन, बुद्धि अथवा चित्त, अहंकार सब शान्त तथा स्थिर अवस्था को प्राप्त

हो जाते हैं। इस तरह कुदरत की वाणी के अनुकरण द्वारा जीवन के विचारयुक्त रास्ते पर स्थिरता से बने रहते हुए इंसान मानवता का स्वाभिमान बन, सतयुग की पहचान बन जाता है और अपने जीवन लक्ष्य को प्राप्त कर प्रकाश नाल प्रकाश हो परमधाम पहुँच विश्राम को पा जाता है। सो सजनों ऐसे बनो, ऐसे बनो, ऐसा बनना कोई कठिन कार्य नहीं है क्योंकि कुदरत ने हम सब पर अपार कृपा करके, मौका प्रदान किया है तभी तो आप सब, सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के द्वारे से जुड़े हुए हो। अतः अब आपको महा वीर यानि सबसे ताकतवर व सर्व-शक्तिमान बनना है और जीवन की हर परिस्थिति में सम रहते हुए कभी भी टूटना नहीं है। ऐसा सुनिश्चित करने में आप कामयाब हों, उस हेतु मन को सर्व-शक्तिमान सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के चरणों में सदा समर्पित रखना है ताकि आत्मज्ञान का प्रवाह आपके अन्तर्घट में उतरता रहे और पूर्व जन्मों के जो संचित कर्म हैं, उनकी पूर्णरूपेण सफाई हो जाये। तात्पर्य यह है कि आपके सब कर्म कट जायें और आप सत्य के प्रतीक बन, सत्यमार्ग पर धर्म-संगत चलने वाले इन्सान बनकर, अन्यों को भी सद्मार्ग पर लाने का अनथक प्रयास तन-मन द्वारा करने में सकुचाओ नहीं और ईश्वर के सुपुत्र कहलाओ। इस सन्दर्भ में जानो कि सुपुत्र को राज देने में पिता गर्वित महसूस करते हैं। सो ऐसे सुपुत्र बनो और अपना अमोलक मानव जीवन सफल करने में कामयाब हो जाओ। फिर कह रहे हैं कि स्वयं पर कृपा करो, दया करो, मेहर करो तथा अपने सजन बनो क्योंकि 'सजन है - आत्मा में परमात्मा'।

यहाँ याद रखो कि जब आप सजन पुरुष बन गये तो आप परमात्म स्वरूप कहलाओगे। सजन पुरुष बनने की विधि बुधवार के बोर्डों में विस्तृत रूप से पूर्णतया व सूक्ष्मतया वर्णित है, उसे पढ़ते-पढ़ते अमल में लाते जाओ। केवल खुद ही नहीं अपितु इसके प्रति अन्यों को भी प्रेरित कर अपनों के सुखकारी बनो और उनके सुखकारी बनने के लिये उन्हें इस द्वारे संग जोड़ने के प्रति दुर्बलता मत दिखाओ।

बोल सजन श्री शहनशाह महाबीर बजरंग बली जी की जय

बोल सजन श्री शहनशाह महाबीर बजरंग बली जी की जय

बोल सजन श्री शहनशाह महाबीर बजरंग बली जी की जय

सजनों अब हम बारम्बार प्रार्थना कर रहे हैं कि आप सब कहना मान लो ताकि आपमें शुभ परिवर्तन देखकर अन्य भी प्रोत्साहित हों और सजन श्री शहनशाह महाबीर जी के द्वारे से जुड़ने का उनको भी अवसर प्राप्त हो। इस तरह वे सब सजन भी जगत का हर कार्य-

व्यवहार करते हुए इस जगत से आज़ाद रहने की कला निपुणता से सीख सकें। हम पुनः कह रहे हैं कि अपने पर, अपने बच्चों पर कृपा करो और उन्हें आध्यात्मिक विचारों से दूर मत रखो। यकीन मानो इसीलिये तो आध्यात्मिक क्रान्ति का शुभ आरम्भ हुआ है। अतः सब संसारी भाव-स्वभाव कुर्बान कर दो क्योंकि क्रान्ति यही कुर्बानी माँगती है। आप सब सजन समभाव-समदृष्टि अनुरूप ढल जाओ इस हेतु सजनों

सम धारो, सन्तोष धारो, धैर्य दा सिंगार रे हाँ

धैर्य दा सिंगार, सत-शास्त्र दा विचार रे हाँ

सजनों यही हमारी प्राथमिकता होनी चाहिये। जब सत-शास्त्र का विचार धार लिया तो विचार के साथ ही प्यार हो जायेगा। विचार के साथ प्यार होने का तात्पर्य है - जीवन का विचारयुक्त सवलड़ा रास्ता अपनाना। चलो अब भजन सुनोः-

हुण लग गई लगन महाबीर जी दे नाल, महाबीर जी दे नाल ओ रघुनाथ जी दे नाल।।

महाबीर जी तों दासी की कुझ मंगदी, प्रेम वैराग साँवले चरणां दा प्यार।

साँवले चरणां दा प्यार, हुण लग गई लगन महाबीर जी दे नाल।।

महाबीर जी तों दासी की कुझ मंगदी, साँवले चरणां दी प्रीत रघुनाथ जी दे नाल।

रघुनाथ जी दे नाल, हुण लग गई लगन महाबीर जी दे नाल।।

महाबीर जी तों दासी की कुझ मंगदी, सम सन्तोष सत शास्त्र दा विचार।

सत शास्त्र दा विचार, हुण लग गई लगन महाबीर जी दे नाल।।

महाबीर जी तों दासी की कुझ मंगदी, शब्द सुरति दा मिलाप रघुनाथ जी दे नाल।

रघुनाथ जी दे नाल, हुण लग गई लगन महाबीर जी दे नाल।।

महाबीर जी तों दासी की कुझ मंगदी, सिया राम लक्ष्मण संग होवन बलधार।

संग होवन बलधार, हुण लग गई लगन महाबीर जी दे नाल।।

महाबीर जी तों दासी की कुझ मंगदी, बनिया रहे दासियां दा सत्संग नाल प्यार।

सत्संग नाल प्यार, हुण लग गई लगन महाबीर जी दे नाल।।

मैं दासी तुआडे चरणां तों वारी, संगतां लावन मेरे बलधारी।

अंजनी लाल अग्गूं साडी नमस्कार, अग्गूं साडी नमस्कार ।

हुण लग गई लगन महाबीर जी दे नाल।।

इस भजन द्वारा सच्चेपातशाह जी कुल दुनियाँ को जनाते हुए कह रहे हैं कि अब हमारे अन्दर ऐसा परिवर्तन आ गया है जिसके द्वारा हमारी सुरत/ख़्याल या मन का लगाव जगत से पूर्णरूपेण हटकर, सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के संग जुड़ गया है। यह शहनशाह के प्रति समर्पित भाव से हर क्षण समरसता से बने रहने की बात है। अतः यह परिवर्तन सबको अपने अन्दर लाना है। याद रखो जैसे ही यह शुभ परिवर्तन आ गया, वैसे ही हमारी चाहत, सदाचार के प्रतीक गुण को प्राप्त करना चाहेगी। इसी महत्ता के दृष्टिगत सच्चेपातशाह जी ने सजन श्री शहनशाह हनुमान जी से दुनियावी कुछ नहीं माँगा अपितु केवल आध्यात्मिक ज्ञान, जो कि एक मानव के पास ज्ञान होना अनिवार्य है, वही माँगा क्योंकि सजन श्री शहनशाह हनुमान जी जैसा न तो आज तक कोई आत्मज्ञानी हुआ है और न ही होगा इसीलिये तो वह भगत शिरोमणि यानि जो सबसे ऊपर हैं वह कहलाते हैं। सो हमारा सीधा सम्बन्ध भगत शिरोमणि सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के द्वारे से जुड़े होने के नाते उन संग है। इस संदर्भ में विडम्बना तो यह है कि हम बुद्धिहीनों ने अभी तक समझदारी से काम नहीं लिया। इतनी बड़ी दात 'द्वारे' के रूप में हमें प्राप्त हुई पर हमने द्वारे से प्राप्त दात पाने में कमजोरी दर्शायी और वही दुर्बलता हमारी स्वाभाविक कमजोरी बन गई। यही कारण है कि हम नश्वरता को प्राप्त करने हेतु लालायित हो उठे और अमरता की प्राप्ति मुकम्मलतया भूल गये। इस तरह सजनों हमने क्या चुना? -

अमरता के स्थान पर नश्वरता का चयन कर लिया।

हम पूछते हैं कि अज्ञानी बन हमने यह कैसा पागलपन दिखाया? ऐसा ही हमारे पुरखों ने भी किया। उन्हें देख हम भी उनके बिछाए जाल में फँस गये क्योंकि हम उनके परिवार में मानव रूप में जो आ गए थे। उन्होंने हमारे स्वाभाविक स्वरूप का सत्यानाश कर दिया। आज हालात यह है कि हम स्वाभाविक तौर पर ऊपर उठने में अपने आप को इतना कमजोर पा रहे हैं कि हमारे रोम रोम, रग-रग में सांसारिक भाव दहक रहे हैं यानि उनकी

आग लगी हुई है। हम उस ताप अग्नि में स्वयं तो जल ही रहे हैं और साथ में औरों को भी जला रहे हैं। हम न तो स्वयं शान्त हैं और न ही किसी और को शान्त रहने देते हैं अन्यथा हम सम, सन्तोष, धैर्य का श्रृँगार पहनकर तेजवान/तेजस्वी बन जाते और हमारा जीवन शिखर को छूता। इस सन्दर्भ में सजनों जानो कि जो भी ज्ञान आता है वह ऊपर (मस्तिष्क) से ही आता है, यही शिखर है। जो ज्ञान यहाँ ऊपर से आता है वह मानव का अपना मौलिक ज्ञान होता है जो कि उसे मानवता में ढाल देता है। जो मानवता में ढल जाता है वह सत्य का प्रतीक, धर्म-संगत सत्य-अनुरूप मन-वचन-कर्म से जीवन की प्रत्येक परिस्थिति में सधा रहता है। यह हम आपको तो समझा ही रहे हैं पर जो नये सजन, जिनका संसार में पदार्पण यानि आगमन हुआ है, उनको भी और साथ ही उनके माता-पिताओं को भी समझा रहे हैं कि खबरदार रहना, इन सजनों के साथ वैर कदापि मत कमाना अपितु सजनता दिखाना। साथ ही इस 'द्वारे' का हर नीति-नियम इन्हें सिखाना, समझाना और व्यावहारिक रूप में करवाना क्योंकि यह इनके स्वभाव के अन्तर्गत करना है।

इस परिप्रेक्ष्य में सजनों आपके घरों में भी जो नयी आत्मायें रूप धारकर आयें, उनके प्रति आपने बताये अनुसार सुनिश्चित करना है ताकि जगत में सतवस्तु का राज स्थापित हो जाये और हर जीव एक छत्र शासन यानि विधि-विधान अनुरूप क्रिया करनी आरम्भ कर दे। सजनों अब दुष्मार्ग का त्यागकर सद्मार्ग अपनाने के लिये तत्पर हो जाओ और अपना सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के द्वारे से जुड़ना सिद्ध कर दो वर्ना तो आप धोखेबाज हो। धोखेबाज अन्ततः धोखा खायेगा ही खायेगा। सो आप अपने साथ अन्याय मत करो अपितु न्याय करो। अब आगे कीर्तन सुनोः-

(महाबीर जी के मुख के शब्द)

श्री रामचन्द्र जी दियां हकलां देखो कैसियां ही ओ आवन जी।

हां हां हकलाँ ओ मारन तरहां तरहां दियां कैसियां ही ओ सुहावन जी।।

गरुड़ ते सवार होके पहुंचे विच दरबार जी।

सांवले दे चरणां दे नाल कैसा है ओ प्यार जी।

करन ओ चरण बन्दना, करन ओ चरण बन्दना।।

चरण बन्दना अनेक बार बन्दना, संहसर बार करन नमस्कार।

करन ओ चरण बन्दना, करन ओ चरण बन्दना।।

राज राजेश्वर जनार्दन प्यारे जगदीश्वर परमेश्वर नाम तुम्हारे।

करन ओ चरण बन्दना, करन ओ चरण बन्दना।।

चरण बन्दना अनेक बार बन्दना, संहसर बार करन नमस्कार।

करन ओ चरण बन्दना, करन ओ चरण बन्दना।।

राघव राघवेन्द्र परमात्मा हमारा, नर नारायण ईश्वर तेरा सहारा।

करन ओ चरण बन्दना, करन ओ चरण बन्दना।।

चरण बन्दना अनेक बार बन्दना, संहसर बार करन नमस्कार।

करन ओ चरण बन्दना, करन ओ चरण बन्दना।।

राम रहीम कृष्ण अवतारे दस पातशाह आये कलुकाल विच सारे।

करन ओ चरण बन्दना, करन ओ चरण बन्दना।।

चरण बन्दना अनेक बार बन्दना, संहसर बार करन नमस्कार।

करन ओ चरण बन्दना, करन ओ चरण बन्दना।।

संहसर हिन तेरे नाम जगत विच कई विरले ही तैं तारे।

विरले सजन कई जीवन बना गये, कई अमर हो गये सारे।

करन ओ चरण बन्दना, करन ओ चरण बन्दना।।

चरण बन्दना अनेक बार बन्दना, संहसर बार करन नमस्कार।

करन ओ चरण बन्दना, करन ओ चरण बन्दना।।

सजनों जानो परमात्मा हर पल मेहरबान हैं, उनकी मेहरबानी स्वीकारो। उनकी शास्त्र-विहित भान्ति-भान्ति की जीवन उद्धारक जो युक्तियाँ हैं, उनमें से जो भी युक्ति सरल लगे उसे अविलम्ब अपना लो। याद रखो जिस किसी युक्ति को भी आप समझते हो कि हम इसके द्वारा अपनी मनोःस्थिति प्रकाश अवस्था में साध सकते हैं, तो उसे निर्विरोध अपना लो। जानो ऐसे ही परमात्मा का साक्षात्कार करने में सक्षम हो सकते हो क्योंकि वह तो हर पल, हर क्षण आपके मन-मन्दिर में शोभित रहते ही हैं। अब 'वस्तु घर में और उसे ढूँढो बाहर', क्या यह अक्लमन्दी है? यह बाल-अवस्था का भक्ति-भाव है जो हमारी मूर्खता को जनाता है।

इसी बाल-अवस्था के भक्ति-भाव अनुसार युगों से हर प्राणी को भगवान की खोज बाहर करने में संलग्न किया जा रहा है। मानो त्रेता युग से यह खेल आरम्भ हुआ और आज इसने बढ़ते-बढ़ते भयावह रूप धारणकर पूरी तरह से इन्सानों के मन-मस्तिष्क को अपने अधिकार में कर लिया है। सजनों यही यथार्थ से भटकाव यानि आत्म-विस्मृति है। त्रेता से आरम्भ होकर आज जगत में यह घिनौना कार्य विख्यात रूप से चल रहा है। तभी तो त्रेता में धर्म तीन पाद पर स्थित होता है। बाल-अवस्था के भक्ति भावों की क्रियाओं की बढ़ोतरी से धर्म दो पाद पर आ जाता है तो द्वापर युग का आगमन हो जाता है। तदुपरान्त धर्म एक पाद पर आ जाता है जो कलियुग का सूचक है। अब कलुकाल के पश्चात् चौरासी के आ जाने पर धर्म का कोई नामो-निशान नहीं रहता। इसलिए आज धर्म विभाजित हो गया है और इसने इन्सानों के दिल-ओ-दिमागों का बँटवारा कर दिया है। कैसी विडम्बना है कि कहाँ तो सतयुग में एकरूपता का पाठ चलता है और कहाँ अनेकानेक भिन्नता की क्रियायें त्रेता से आरम्भ होकर द्वापर में बढ़ती हैं और कलियुग में इसका कोई पारावार ही नहीं रहता क्योंकि हर कोई अध्यात्म से गिरकर भौतिकता का गुलाम बन जाता है।

अतः मानो कि अब तक आपने जो भी जीवन व्यतीत किया, वह विचार अपनाने में असमर्थ होने के कारण गुलामी का ही जिया। इसी कारण ने आपको स्वार्थपर इन्सान बना दिया। अब इन स्वार्थपर विचारों को व्यवहार में लाकर व तद्नुरूप अपने मन-वचन-कर्म को ढाल कर आपने अपना सत्यानाश खुद ही कर लिया है। केवल अपना ही नाश नहीं बल्कि परिवारजनों व समाज का भी नाश कर दिया है। तभी तो सच्चेपातशाह जी सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में लिखते हैं कि हे मानव ! क्या करने आया था और क्या कर बैठा? जो

दूसरों से फसाद करके तुझे खुशी मिली उससे दूसरों को तो दुःख हुआ ही हुआ, उनको ठेस पहुँची ही पहुँची पर उनसे अधिक नुक्सान तो करने वाले को ही मिला क्योंकि करनी का फल निश्चित रूप से मिलता है। यह फल चाहे शारीरिक रोग के रूप में मिलें चाहे मानसिक रोग के रूप मे या फिर आध्यात्मिक रोग के रूप में मिले। इस तरह इंसान तीनों तापों से रोगग्रस्त हो जाता है और दूसरे उसको अपने अधीन रखने के लिये गुमराह कर देते हैं। इस संदर्भ में सजनों यदि अक्लमन्द इन्सान किसी के हाथों में आकर धोखा खा जाये तो यह लानत की बात होती है। बताओ कि क्या ऐसे इंसानों के जीवन का अन्त मोक्ष हो सकता है?

'कदापि नहीं'।

इस संदर्भ में सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ जो हमें कुदरत ने प्रदान किया है, वह कह रहा है कि यदि चौरासी लाख योनियों से बचना चाहते हो तो अविचारयुक्त कठिन दुर्गम रास्ता छोड़ दो और शब्द ब्रह्म विचारों को धारकर सीधे सुगम रास्ते पर जो सच्चे घर परमधाम को जाता है, आ जाओ। सजनों जानो कि कमजोर अज्ञानी इन्सान सदा हारता ही हारता है। याद रखो जब तक अध्ययन द्वारा, सद्‌ज्ञान प्राप्त नहीं करते, तब तक विजय अनिश्चित है। यहाँ ग्रन्थ कह रहा है कि अपने को सुन्दर दिखाने हेतु जितने भी सूट साड़ियाँ पहननी हैं पहन लो, कोट, पतलून, टाई लगानी है लगा लो, पर याद रखो कि जो इन्सान इस झूठी शान को असली शान मानते हैं, वह सौदाई हैं, पागल हैं। असली शान तो आचरण की विशुद्धता साधने वाले की होती है। वह ही आत्म-दर्शन या आत्म-प्रकाश में सुलभता से स्थिर रहते हैं और ख़्याल/ध्यान प्रकाश में साध आत्मज्ञान प्राप्त करते हैं। इससे उनका मन मिटकर शान्त हो जाता है। सच्चेपातशाह जी कहते हैं:-

मन मिटया ते होया है आनन्द मालका,

तेरी जोति हिम कुल जहान मालका।

सजनों यह सर्वोत्तम अवस्था होती है। इस सन्दर्भ में जानो कि आध्यात्मिक क्रान्ति सांसारिक भाव-स्वभाव की हर कुर्बानी माँगती है अतः उन्हें जड़ से उखाड़कर फैंक दो। यह व्यक्तिगत स्तर पर स्वयं आपको ही सुनिश्चित करना है। इसमें कोई अन्य सहायता नहीं कर सकता। फुरनों से युक्त जितने चाहो जप-तप-संयम कर लो, वह सब अविचारयुक्त

ही होंगे जो कि निश्चित रूप से समय की बर्बादी होगी। जानो समय की बर्बादी अपनी खुद की बर्बादी होती है। इस परिप्रेक्ष्य में सच्चेपातशाह जी कहते हैं कि अब आबाद होने का समय है क्योंकि कलुकाल जा रहा है, सतवस्तु आ रहा है। अपनी आबादी के प्रति तत्पर व सतर्क हो जाओ और जीवन सफल बनाओ। अब आगे सुनोः-

(महाबीर जी के मुख के शब्द)

थोड़े दिनां दे अन्दर परलो होसी, सृष्टि होनी है खाली सतवस्तु दा वाली।

सतवस्तु दा वाली ओ राज करेगा, ओहदी कैसी है चाल निराली, सतवस्तु दा वाली।।

समझन विच नहीं पाई ओ जांदी दाता जी बात तुम्हारी।

इक पासे सृष्टि खाली करो इक पासे करो रखवाली सतवस्तु दा वाली।।

कर्मां अनुसार सृष्टि उपजे बिनसे, कर्मां अनुसार मरेंगे।

जिन्हां बाज़ी जित लई अपनी, ओ क्यों दुःख सहन करेंगे, सतवस्तु दा वाली।।

जेहड़ा राम नाम भुलावे ओ जीव चौरासी पावे।

ओ चौरासी क्यों भुगते जेहड़ा राम नाम ह्रदय वसावे, सतवस्तु दा वाली।।

साजन जी इक शब्द बताऊं सुन लौ ध्यान लगा करके।

श्री राम बैठे शक्ति लक्ष्मी बैठे, साजन जी नूं गोदी विच चा करके।

कलुकाल हटने नूं तैयार ओ खड़ा, चार चुफेरी मार ओ खा करके, सतवस्तु दा वाली।।

(अब श्री रामचन्द्र जी कह रहे हैं)

है ओ अजीत जितिया न जावे, जित्त प्यारे हनुमान जी दी होसी।

अगम अगोचर ओ लखिया ना जावे सतवस्तु विच उसे दी पहचान होसी सतवस्तु दा वाली।।

(श्री महाबीर जी कह रहे हैं)

शब्दः

चौरासी है बहुरंगी, दुःख पावे ओ पाखण्डी, ए बात न भुलाना।

ऐहो बात है याद रखनी, फिर न पछोताना।।

ध्वनिः-

हैरान हां सतवस्तु दा वाली।

चाल है तुहाडी कैसी निराली।।

इस कीर्तन को सुनकर तो आपको व कुल ब्रह्माण्ड को होश में आ जाना चाहिये और अपनी दिनचर्या के समय जो भी मन-वचन द्वारा कर्म करते हो उन कर्मों पर अपनी पूरी पकड़ बनानी चाहिये ताकि कोई भी कर्म अधर्मयुक्त न हो। ऐसी भूल किसी से भी न हो उसके लिये अपने धर्म को पहचानो और धर्म को पहचानने के लिये आत्मिकज्ञान प्राप्त करो ताकि ऐसा पुरुषार्थ दिखाने के उपरान्त जीवन में जो भी कर्म करो वह निष्कामतापूर्वक ही करो। आपका कोई भी कर्म कुकर्म-अधर्मयुक्त नहीं होना चाहिये, इसके लिये आपको हिम्मत दिखानी पड़ेगी वर्ना कर्मगति बता दी है कि चौरासी लाख योनियों में भटकते हुए बेढँगा जीवन जीने के लिये बाध्य हो जाओगे। बेढँगा जीवन जीने में बहुत दुःख होता है और विवेकशक्ति क्षीण हो जाती है। याद रखो जब चौरासी लाख योनियों के पश्चात फिर मानव चोला मिलेगा तब पुनः आपको कुदरत द्वारा विवेकशक्ति प्रदान की जायेगी। यह भी चेताया जायेगा कि पहले तो तूँ हारा था पर अब विवेकबुद्धि होकर विजयी हो जा और सत्य और झूठ की परख करने वाला बन जा। जानो सतवस्तु के वाली की चाल बहुत ही निराली है जो कि सर्वश्रेष्ठता को प्राप्त होने जैसी बात है। आपको तो सुनहरी मौका मिला है, अतः घरों में रहकर इधर-उधर की कानाफूसी करने में समय व्यर्थ मत गँवाओ और घर का सुख-चैन खोकर जीवन बर्बाद मत करो। दुराचारी, अत्याचारी, भ्रष्टाचारी, व्याभिचारी मत

बनो अपितु अपना दाता-दातार वाला भाव अपनाओ। मालिक के प्यारों का जो हक होता है वह उन्हें देने में कँजूसी मत करो। वह कँजूसी बहुत महँगी पड़ती है क्योंकि उनका हक़ मारना या किसी का भी हक मारना, मरण समान होता है। इस सन्दर्भ में आपको अपना दिल भी उदार रखना होगा। सतवस्तु के वाली की चाल निराली है। जो इस चाल को पकड़ता है उसका बेड़ा भवसागर से पार हो जाता है।

बोल सतवस्तु के वाली श्री साजन जी की विजय, विजय, विजय

बोल सतवस्तु के वाली श्री साजन जी की विजय, विजय, विजय

बोल सतवस्तु के वाली श्री साजन जी की विजय, विजय, विजय

अन्त में आपसे एक बार फिर अनुरोध करते हैं कि अपने सजन बन जाओ और अपना जीवन सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में विदित ब्रह्मज्ञान के अनुसार ढाल लो व अपने वास्तविक घर पहुँच विश्राम को पाओ।

अब सात सितम्बर को सबने आना है क्योंकि उस दिन विश्व समभाव दिवस है। उस दिन समभाव के विषय में विस्तारपूर्वक व सूक्ष्मतः भी समझाया जायेगा। इसके साथ यह भी बताया जायेगा कि समभाव अपनाना क्योंकर आवश्यक है और उससे आपका जीवन सुख व आनन्द से कैसे भर सकता है। अगर बात को मान लिया तो आपके परिवारों के सब लड़ाई-झगड़े समाप्त हो जायेंगे। जो बात अच्छी होती है उसको अपनाना इन्सान का धर्म होता है अतः धर्म मत हारना। उस दिन धर्मपरायण बनने हेतु सबने अपने परिवारों सहित आना ही आना है। दस बजे तक अपने-अपने स्थान पर विराजमान हो जाना।

इन्हीं शुभकामनाओं सहित सबको जय सीताराम।